प्रत्यय

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» प्रत्यय की परिभाषा और प्रकार

प्रश्न 1 (आसान). प्रत्यय किसे कहते हैं?
उत्तर – धातु या शब्द के पश्चात् जुड़ने वाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं।

प्रश्न 2 (आसान). धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्यय को क्या कहते हैं?
उत्तर – कृत् प्रत्यय।

प्रश्न 3 (आसान). संज्ञा-शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय को क्या कहते हैं?
उत्तर – तद्धित प्रत्यय।

प्रश्न 4 (मध्यम). जब प्रत्यय पुल्लिंग को स्त्रीलिंग में बदल दे, तो उसका प्रकार क्या होगा?
उत्तर – स्त्री प्रत्यय।

प्रश्न 5 (कठिन). एक शब्द-रचना में आधार-शब्द 'धातु' है और उसके बाद प्रत्यय लगकर संज्ञा/विशेषण/अव्यय बन रहा है। यह किस प्रकार का प्रत्यय होगा?
उत्तर – कृत् प्रत्यय।

» कृत् प्रत्यय–अर्थ-निर्माण की मूल समझ

प्रश्न 6 (आसान). कृत् प्रत्यय धातु में लगते हैं या शब्द में?
उत्तर – धातु में लगते हैं।

प्रश्न 7 (आसान). 'क्त्वावा', 'ल्यप्', 'तुमुन्' किस प्रकार के पद बनाते हैं?
उत्तर – अव्यय बनाने वाले प्रत्यय हैं।

प्रश्न 8 (मध्यम). कौन से प्रत्यय धातु से विशेषण बनाने में आते हैं: 'शतृ' या 'तृच्'?
उत्तर – 'शतृ' विशेषण बनाने में आता है।

प्रश्न 9 (मध्यम). भूतकालिक/पूर्व-क्रिया भाव वाले प्रयोग के लिए संकेत में कौन से प्रत्यय दिए हैं?
उत्तर – 'तव्यत्', 'अनीयर्' और 'यत्'।

प्रश्न 10 (कठिन). 'णवुल्' किस प्रकार का अर्थ बनाता है–अव्यय, विशेषण, भूतकालिक-भाव, या संज्ञा?
उत्तर – संज्ञा (धातु से संज्ञा बनाने हेतु) ।

» अव्यय बनाने वाले कृत् प्रत्यय: क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्

प्रश्न 11 (आसान). 'के लिए/मकसद' अर्थ में कौन सा कृत् प्रत्यय लगता है?
उत्तर – तुमुन्

प्रश्न 12 (आसान). धातु से पहले उपसर्ग लगा हो तो 'क्त्वा' की जगह कौन सा प्रत्यय आएगा?
उत्तर – ल्यप्

प्रश्न 13 (मध्यम). 'पढ़ना' और 'जाना'–यदि 'जाना' 'पढ़ने के लिए' है, तो 'पढ़ना' में कौन सा प्रत्यय लगेगा?
उत्तर – तुमुन् पठितुं

प्रश्न 14 (कठिन). वाक्य-भाव: "उड़कर, खगाः … प्रसन्नाना भवन्ति।" यहाँ 'उड़कर' वाले भाव के लिए कौन सा प्रत्यय होगा और क्यों?
उत्तर – ल्यप् (पूर्वकालिक 'उड़कर' के भाव में) क्योंकि यह 'पूर्व-क्रिया' है; तुमुन् 'के लिए' होता है, 'करके/पूर्वकालिक' नहीं।

» शतृ और शानच् प्रत्यय–साथ-साथ होने वाला/करता हुआ

प्रश्न 15 (आसान). लिख् + शानच् (आत्मनेपद) में 'साथ-साथ करता हुआ' भाव दिखाओ। (रूप का भाव बताओ)
उत्तर – आत्मनेपद होने पर शानच् 'लिख् + मान' जैसा विशेषण बनेगा; जैसे 'लिखमान/लिखमाना/लिखमानम्' (संदर्भ के अनुसार विभक्ति बदलती है)।

प्रश्न 16 (आसान). सेव् + शानच् का पुं. प्र. का मूल रूप क्या होगा?
उत्तर – सेवमान:

प्रश्न 17 (मध्यम). दिए गए वाक्य को साथ-साथ वाले भाव में बदलो: 'बालिका पठति' और 'बालिका क्रीडति'–तुम्हें 'करती हुई' बालिका एक ही विशेषण से बतानी है।
उत्तर – गच्छन्ती/क्रीडन्ती जैसा नहीं; यहाँ 'पठति' के साथ 'क्रीडति' नहीं; सही: 'पठन्'/'पठन्ती' बालिका क्रीडति नहीं बनता। सही बनेगा: 'क्रीडन्ती बालिका पठति' (या 'पठन्ती बालिका क्रीडति'), साथ-साथ क्रिया के अनुसार विशेषण चुनो। उदाहरण: 'क्रीडन्ती बालिका पठति'।

प्रश्न 18 (कठिन). 'उपविशन्तं' किसके लिए आएगा? मान लो वाक्य: 'गुरुः ___ शिष्यं वदति' और 'शिष्यं' द्वितीया है। कौन-सा प्रत्यय-वाला रूप लगेगा और क्यों?
उत्तर – उपविश् (परस्मैपद) का शतृ 'उपविशत्' बनेगा। क्योंकि 'शिष्यं' द्वितीया एकवचन (नपुंसक/उचित लिंग) है, इसलिए विशेषण भी द्वितीया के अनुसार रूप लेगा–'उपविशन्तम्'।

प्रश्न 19 (कठिन). 'मोददमानस्य जनस्य' में शानच् क्यों और अर्थ क्या है?
उत्तर – मोद् + शानच् से 'मान' वाला विशेषण बनता है, इसलिए शानच्। 'मोददमानस्य' का अर्थ है 'जो प्रसन्न होते हुए/प्रसन्नता करता हुआ' (साथ-साथ चल रही स्थिति/क्रिया वाला जन)।

» भूतकालिक क्रिया: क्त और क्तवतु

प्रश्न 20 (आसान). 'कृ + क्त्वा = कृत्वा' का अर्थ क्या बनता है?
उत्तर – करके

प्रश्न 21 (आसान). 'गम् + क्त्वावा = गत्वावा' का अर्थ क्या?
उत्तर – जाकर

प्रश्न 22 (मध्यम). 'दृश् + क्त्वावा' से बना रूप और भाव लिखो।
उत्तर – दृष्ट्वा – देखकर (पहले देखना, फिर मुख्य काम)

प्रश्न 23 (मध्यम). क्त/क्तवतु में अर्थ-भेद किस पर निर्भर करता है?
उत्तर – धातु सकर्मक/अकर्मक तथा कारक-व्यवस्था (कर्म/कर्ता/भाव) पर

प्रश्न 24 (कठिन). वाक्य-योजना: '(पहले) सुनकर, वह उत्तर बताता है।' कर्ता स्थिर मानो (वह/बालक/राम)। 'सुनकर' के लिए भूतकालिक क्रिया लिखो और पूरा भाव बनाओ।
उत्तर – श्रुत्वा (पहले सुनना) के साथ: रामः उत्तरं श्रुत्वा (या "श्रुत्वा" के बाद मुख्य क्रिया 'कथयति/बतयति' लगेगा; मुख्य काम कर्ता राम का होगा)

» तव्यत्, अनीयर् और यत्-ण्यत्-क्यप्–'चाहिए/योग्य' के रूप

प्रश्न 25 (आसान). "बालकेन कथा ___" में तव्यत् जोड़कर भरिए।
उत्तर – पठितव्या (यदि कथा स्त्रीलिंग मानें) / सामान्य रूप से: बालकेन कथा पठितव्या।

प्रश्न 26 (आसान). "जि + अनीयर्" से 'जिन' भाव का रूप क्या होगा?
उत्तर – जयनीयम् (जि + अनीयर् = जयनीयम्)।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'पुस्तकं पढ़ने योग्य है' को 'योग्य' भाव में तव्यत्/अनीयर् से बनाइए।
उत्तर – पुस्तकं पठितव्यम्/पठितव्यं (यहाँ 'योग्य' के लिए विशेषण-जैसा प्रयोग होगा; पाठ/पुस्तक के लिंग-अनुसार रूप चुनो)।

प्रश्न 28 (मध्यम). "छात्रेण ___ पाठः ___" में केस सही रखते हुए 'पठ् + तव्यत्' से पूर्ण वाक्य बनाइए।
उत्तर – छात्रेण पाठः पठितव्यः।

प्रश्न 29 (कठिन). 'लिखने योग्य लेख' को क्यप् से नहीं, बल्कि यत्/ण्यत्/क्यप् में 'चाहिए/योग्य' अर्थ वाला सही प्रत्यय चुनकर बनाइए: (धातु: लिख्, कर्म: लेखः/लेखम्)
उत्तर – लिख् + अनीयर् = लेखनीयम् ; 'लेखनीयं लेखम्' या 'लेखः लेखनीयः'–लिंग/वचन के अनुसार। उदाहरण रूप: लेखनीयम्।

प्रश्न 30 (कठिन). 'छात्र द्वारा श्रवण-योग्य बात' भाव व्यक्त कीजिए। (श्रु+ अनीयर्/श्रवणीयम् का प्रयोग) केस भी लिखिए।
उत्तर – छात्रेण श्रवणीयः/श्रवणीयम् (विषय के लिंगानुसार) – उदाहरण: छात्रेण श्रवणीयः शब्दः/कथनम्।

» तद्धित प्रत्यय–शब्दों से अर्थ बदलने वाले प्रत्यय

प्रश्न 31 (आसान). तद्धित प्रत्यय किसके साथ जुड़ते हैं–धातु या संज्ञा/विशेषण जैसे शब्दों के साथ?
उत्तर – संज्ञा/विशेषण/प्रातिपदिक जैसे शब्दों के साथ।

प्रश्न 32 (आसान). तद्धित प्रत्ययुक्त शब्दों में क्या लगता है?
उत्तर – कारक-विभक्तियाँ लगती हैं।

प्रश्न 33 (मध्यम). कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय का आधार अलग कैसे याद रखोगे?
उत्तर – कृत् में धातु आधार होता है, तद्धित में संज्ञा/विशेषण/प्रातिपदिक (शब्द) आधार होता है।

प्रश्न 34 (कठिन). अगर किसी रूप में अर्थ 'संबंधित/उससे जुड़ा' बन रहा हो और साथ कारक-विभक्ति लग रही हो, तो तुम्हें किस प्रत्यय-श्रेणी का अंदाज़ा होगा–कृत् या तद्धित?
उत्तर – तद्धित प्रत्यय का।

» स्त्री प्रत्यय–पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाना

प्रश्न 35 (आसान). 'गायक' का स्त्रीलिंग रूप लिखिए।
उत्तर – गायिका

प्रश्न 36 (आसान). 'नायक' का स्त्रीलिंग रूप लिखिए।
उत्तर – नायिका

प्रश्न 37 (मध्यम). 'गोप' का स्त्रीलिंग रूप लिखिए।
उत्तर – गोपी

प्रश्न 38 (मध्यम). 'बालक' का स्त्रीलिंग रूप लिखिए।
उत्तर – बालिका

प्रश्न 39 (कठिन). 'त्रिलोक' का स्त्रीलिंग रूप लिखिए (द्विगु समास के नियम से)।
उत्तर – त्रिलोकी

प्रश्न 40 (कठिन). 'दर्शयत्' का स्त्रीलिंग रूप बनाइए।

उत्तर – दर्शयन्ती

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. दिए गए विकल्पों में बताओ–कौन-सा प्रत्यय प्रकार है: (1) धातु के बाद लगने वाला प्रत्यय, (2) संज्ञा के बाद लगने वाला प्रत्यय, (3) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने वाला प्रत्यय।

› पहचानो कि प्रत्यय किस आधार पर जुड़ रहा है: धातु, संज्ञा, या पुल्लिंग।

› अगर आधार धातु है तो प्रकार होगा–कृत् प्रत्यय।

› अगर आधार संज्ञा है तो प्रकार होगा–तद्धित प्रत्यय।

› अगर काम पुल्लिंगस्त्रीलिंग बदलना है तो प्रकार होगा–स्त्री प्रत्यय।

उत्तर – (1) कृत् प्रत्यय, (2) तद्धित प्रत्यय, (3) स्त्री प्रत्यय।

उदाहरण 2. धातु 'दृश्' में 'क्त्वा/क्त्वावा' जैसा कृत् प्रत्यय जोड़ने पर बना पद और अर्थ-निर्माण किस प्रकार का होगा–अव्यय, विशेषण, भूतकालिक-भाव, या संज्ञा?

› पहचान करो: 'दृश्' क्रिया/धातु है।

› दिया है कृत् प्रत्यय 'क्त्वा/क्त्वावा' (अव्यय बनाने वाला कृत् प्रत्यय)।

› इसलिए पद का प्रकार: अव्यय (काम/भाव को जोड़कर वाक्य में चलता है)।

› अर्थ लिखो: किताब की शैली में 'दृश् + क्त्वा = दृष्ट्वा' और अर्थ 'देखकर' निकलता है।

› अब अर्थ-भाव तय करो: यह मुख्य क्रिया से पहले हुई क्रिया का संदर्भ देता है (पूर्व-क्रिया का भाव)।

उत्तर – 'दृश् + क्त्वा' से 'दृष्ट्वा' बनता है; यह 'देखकर' के अर्थ वाला अव्यय पद है, जो मुख्य क्रिया से पहले वाली क्रिया का भाव देता है।

उदाहरण 3. उपसर्ग लगा धातु 'आ + नी + ल्यप्' और 'पढ़ना' के लिए तुमुन् बनाओ: (i) 'लाकर' वाला रूप (ii) 'पढ़ने के लिए' वाला रूप।

› ध्यान दो: 'आ + नी + ल्यप्' में उपसर्ग 'आ' पहले ही है, इसलिए पूर्वकालिक के लिए 'ल्यप्' आएगा।

› अर्थ लिखो: 'आनीय' = आकर/लाकर (प्रसंग के अनुसार) 'लाकर' वाला भाव।

› अब 'के लिए/निमित्तार्थ' चाहिए, इसलिए 'तुमुन्' लगेगा।

› 'पढ़ना' धातु से तुमुन् जोड़कर 'पठितुम्/पठितुं' रूप आता है (वाक्य-रचना के अनुसार)।

उत्तर – (i) आ + नी + ल्यप् आनीय (लाकर/लाने वाला पूर्वकालिक भाव)

(ii) पढ़ना + तुमुन् पठितुं (पढ़ने के लिए)

उदाहरण 4. पुत्रं भोजनाय कथयति। साथ-साथ पिता जो पुत्र को कह रहे हैं, वह 'गच्छत्'–जा रहा/जाते हुए–है। सही रूप बनाओ: 'जो जाता हुआ पुत्र' = गच्छन् + विशेष्य के अनुसार।

› पहचानो: 'पुत्रं' शब्द द्वितीया विभक्ति में है (भोजनाय के साथ)। इसलिए विशेषण (शतृ) भी द्वितीया में जाएगा।

› परस्मैपद धातु गम् का शतृ-रूप 'गच्छत्' (जाता हुआ) बनता है।

› अब 'पुत्रम्' नपुंसक एकवचन द्वितीया है; शतृ का रूप नपुंसक द्वितीया = 'गच्छत्' के साथ त्न्त् + म्, यानी 'गच्छन्तम्'।

› वाक्य जोड़ दो: पिता गच्छन्तम् पुत्रं भोजनाय कथयति।

उत्तर – पिता गच्छन्तम् पुत्रं भोजनाय कथयति।

उदाहरण 5. निम्न वाक्य-निर्माण करो: "रामः (किसी वस्तु को) लाकर, शिक्षक को दिखाता है।" संस्कृत में "लाकर" के लिए भूतकालिक क्रिया का प्रयोग करके वाक्य बनाओ।

› मुख्य क्रिया पहचानो: "दिखाता है" (मुख्य काम) – अभी राम करेगा।

› पूर्वकालिक क्रिया पहचानो: "लाना" (पहले वाला काम) – इसके लिए धातु दा/आनीत् जैसा अर्थ लेना है; 'लाकर' भाव के लिए क्तवतु/ल्यप् अध्याय में 'आनी + ल्ययप् = आनीय' भी दिया है।

› क्योंकि "लाकर" को मुख्य क्रिया से पहले दिखाना है, 'आ + नी + ल्ययप् = आनीय' (लाकर) का प्रयोग कर के पूर्वकालिक क्रिया बनाओ।

› अब वाक्य में कारक-संबंध बैठाओ: राम कर्ता है; जिस वस्तु को लाकर दिखाया जाएगा वह कर्म होगा (जैसे "पुस्तकम्/कन्दुकम्" जैसी संज्ञा कर्म-विभक्ति में)।

उत्तर – रामः पुस्तकं आनीय शिक्षकं दर्शयति।

उदाहरण 6. "जिस पाठ को छात्र द्वारा पढ़ा जाना चाहिए" को संस्कृत में तव्यत्/अनीयर् के अर्थ-रूप से बनाइए। (कर्ता: छात्र, कर्म: पाठ)

› भाव पहचानो: 'पढ़ा जाना चाहिए' = 'चाहिए' (क्रिया-रूप जैसा)।

› तव्यत्/अनीयर् नियम लगाओ: कर्ता तृतीया में होगा और कर्म प्रथमा में।

› धातु: पठ् (पढ़ना)।

› यहाँ धातु में तव्यत् का रूप लगाओ: पठ् + तव्यत् = पठितव्यम्/पठितव्यः (लिंग कर्म के अनुसार चलेगा)।

› 'पाठ' शब्द प्रथमा में: पाठः। कर्ता 'छात्र' तृतीया में: छात्रेण।

› अंतिम रूप: छात्रेण पाठः पठितव्यः (पढ़ा जाना चाहिए)।

उत्तर – छात्रेण पाठः पठितव्यः।

उदाहरण 7. "विद्यार्थी" शब्द को तद्धित प्रत्यय की मदद से 'विद्यार्थी से सम्बन्धित/विद्यार्थी-सा' भाव देने वाले रूप में समझाना है। तद्धित प्रत्यय का आधार क्या है और फिर कारक-विभक्ति कब लगेगी?

› तद्धित प्रत्यय का आधार पहचानो: यह संज्ञा/विशेषण/प्रातिपदिक जैसे शब्दों पर लगता है (धातु पर नहीं)।

› जब शब्द के साथ तद्धित प्रत्यय जुड़ता है, तो अर्थ बदलता है–सम्बंध/विशेष भाव जुड़ता है।

› तद्धित-प्रत्ययययुक्त नए शब्द पर वाक्य के अनुसार कारक-विभक्ति लगती है–यानी शब्द बनाकर बाद में विभक्ति लगती है।

उत्तर – आधार शब्द (जैसे 'विद्यार्थी') है; तद्धित प्रत्यय अर्थ बदलकर 'विद्यार्थी से सम्बन्धित/उसका भाव' देता है, और फिर कारक-विभक्ति वाक्य में लगाने पर लगती है।

उदाहरण 8. 'शिक्षक' शब्द का स्त्रीलिंग रूप बनाइए।

› देखो: 'शिक्षक' पुल्लिंग शब्द के अंत में 'अक' है।

› नियम याद करो: 'अक' वाले शब्द में 'आ' प्रत्यय लगाने पर 'इक' हो जाता है।

› अब रूप बनता है: शिक्षक + आ शिक्षिका।

उत्तर – शिक्षक का स्त्रीलिंग रूप: शिक्षिका

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- बोर्ड/टर्म परीक्षा में अक्सर "किस आधार पर कौन-सा प्रत्यय?" जैसा 1-मार्क प्रश्न आता है–इसी पर उत्तर लिखो।
- उत्तर लिखते समय 'पद का प्रकार' (अव्यय/विशेषण/संज्ञा) जरूर बताना।
- उत्तर लिखते समय अर्थ जरूर लिखो: 'करके' (क्त्वा/ल्यप्) या 'के लिए' (तुमुन्)।
- वाक्य में जो संज्ञा विशेष्य है, उसी की विभक्ति-वचन पहचानकर शतृ/शानच् वाले शब्द को उसी से match करो।
- बोर्ड-प्रश्न में 'कर्म/कर्ता/भाव' पूछें तो सकर्मक-अकर्मक और कारक-व्यवस्था साथ लिखना।

- बोर्ड/परीक्षा में हमेशा केस (तृतीया/प्रथमा) और 'चाहिए बनाम योग्य' का प्रयोग-स्थान लिखना–यहीं नंबर आता है।
- तद्धित पहचानकर 'आधार शब्द' और 'कारक-विभक्ति'–दो बातें जरूर लिखो।
- 'अक' वाले पुल्लिंग में 'आ' लगाकर 'इक' बनना लिखो–यही सवालों का खास टर्न होता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› - धातुकृत्, संज्ञातद्धित, पुल्लिंगस्त्री प्रत्यय
› - कृत् = धातु में + (अव्यय/विशेषण/पूर्व-भाव/संज्ञा)
› उपसर्ग? ल्यप्; मकसद? तुमुन्; पूर्वकालिक? क्त्वा/ल्यप्
› शतृ=परस्मैपद, शानच्=आत्मनेपद; विशेषण; लिंग-विभक्ति-वचन वही
› - क्त/क्तवतु = पूर्व काम; कारक-व्यवस्था ध्यान से
› तव्यत्/अनीयर्: कर्ता तृतीया, कर्म प्रथमा; 'चाहिए'/'योग्य' प्रयोग से तय।
› तद्धित = शब्द+प्रत्यय; अर्थ बदलता; विभक्ति लगती
› - अकारान्त: आ, 'अक': इक, ऋ/नकारान्त/शतृ: ई